Rai University AHMEDABAD
RISING - A Journal of Researchers
Bi-Annuals Peer Review Journal
Vol.6 Issue 1 (Jan 2022)
Impact Factor : 5.969
RISING A journal of researchers
ISSN No : 2456-7752

ओट्टो एर्न्स्ट स्मिट की कविता 'निस रैंडेर्स' में जर्मन जनजातीय जीवन का चित्रण

(English: Portrayal of German Tribal Life in Otto Ernst Schmidt's 'Nis Randers')

डॉ. रोशन लाल जाहेल

सहायक आचार्य, जर्मन अध्ययन केंद्र, गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय, गाँधीनगर

roshanjahel@gmail.com

शोध सार:

जर्मनी के फ़्रिसियाई जनजातीय समुदाय का जीवन चित्रण न केवल उनकी अपनी स्थानीय भाषाओं में लिखित साहित्य में, बल्कि मुख्यधारा के जर्मन साहित्य में भी मिलता है। फ़्रिसियाई समुदाय उत्तरी जर्मनी में उत्तर सागर के किनारे पर बसा एक छोटा सा जनजातीय समुदाय है, जिनका उल्लेख और जीवन चित्रण जर्मनी के कई प्रसिद्ध साहित्यकार अपनी रचनाओं में करते हैं। ऐसे ही एक साहित्यकार है ओट्टो एर्न्स्ट स्मिट। ओट्टो एर्न्स्ट स्मिट जन्म 1862 ई. में हैम्बर्ग के पास ऑटेनज़ेन में हुआ था। इस आलेख में ओट्टो एर्न्स्ट स्मिट द्वारा लिखित एक कविता 'निस रैंडेर्स' में फ़्रिसियाई समुदाय के प्रकृति के साथ सम्बन्ध और उनके सांस्कृतिक मूल्यों के चित्रण की विवेचना करने का प्रयास है।

शब्द बीज: जर्मन कविता, निस रैंडेर्स, जर्मन अल्पसंख्यक जनजातियाँ, फ़्रिसियाई समुदाय, ओट्टो एर्न्स्ट स्मिट।

© 2017 Rai University, Ahmedabad. All Rights Reserved

मूल आलेख:

जर्मनी में वर्तमान में चार जनजातीय समुदाय है, जिनको राष्ट्रीय अल्पसंख्यक समुदाय का दर्जा प्राप्त है। इन जनजातीय समुदायों के नाम है: डेनिश अल्पसंख्यक समुदाय, सोर्बीयन, फ़्रिसियाई, और जर्मन रोमा-सिंटी समुदाय। जर्मन सरकार ने राष्ट्रीय अल्पसंख्यक समुदायों को चिन्हित करने के लिए पाँच मापदंड निर्धारित किए हैं, जिनके आधार पर राष्ट्रीय अल्पसंख्यक समुदायों की पहचान की जाती है। यह मापदंड हैं - "1. उक्त समुदाय के सदस्य जर्मनी के नागरिक हो। 2. उक्त समुदाय अपनी भाषाई, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पहचान के कारण बहुसंख्यक आबादी से भिन्न हो। 3. वे अपनी भाषाई, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पहचान का संरक्षण करने के लिए प्रयासरत हो। 4. वे परंपरागत रूप से जर्मनी में निवास करते रहे हैं (आमतौर पर सदियों के लिए); और 5. वे जर्मनी में पारंपरिक क्षेत्रों के भीतर रहते हो।"[1] इन चारों समुदायों के लिए संवैधानिक तौर पर 'राष्ट्रीय अल्पसंख्यक समुदाय' कहा जाता है| हालाँकि फ़्रिसियाई और सोर्बीयन समुदायों के लोगों को अलग-अलग कारणों से अपने आप को 'राष्ट्रीय अल्पसंख्यक समुदाय' के तौर पर परिभाषित किया जाने से आपत्ति है। उदाहरण के तौर पर फ़्रीजीयन लोग अपने आप को अल्पसंख्यक समुदाय के बजाय एक जनजातीय समुदाय के रूप में परिभाषित करना पसंद करते हैं।[2] जर्मनी के यह राष्ट्रीय अल्पसंख्यक समुदाय जर्मनी की मुख्य आबादी से भिन्न है। ये लोग अपनी भाषा, संस्कृति और इतिहास की विशिष्टताओं को संरक्षित रखना चाहते हैं और इसी कारण जर्मनी के संविधान में इन अल्पसंख्यक जनजातीय समुदायों के लिए कुछ विशेष प्रावधान रखे गए हैं। उदाहरण के तौर पर इन चारों समुदायों की भाषा और संस्कृति को जर्मनी संघीय सरकार और प्रादेशिक सरकारों से संवैधानिक संरक्षण प्राप्त है। जर्मन संघीय सरकार इन राष्ट्रीय अल्पसंख्यकों के लिए एक आयुक्त की भी नियुक्ति करती है, जो इन समुदायों और सरकार के बीच संपर्क सूत्र का काम करता है।

सोर्बीयन जनजाति:

सोर्बीयन समुदाय मूलरूप से एक स्लाविक जनजाति है, जो जर्मनी के उत्तर पूर्वी हिस्से में निवास करती है। इस जनजाति के लोग टॉटेनबुर्ग और स्प्री वैल्ली के क्षेत्र में रहते हैं। इनकी सोर्बीयन भाषा स्लाविक भाषा परिवार का हिस्सा है और यह भाषा वर्तमान में जर्मनी की एकमात्र आधिकारिक मान्यता प्राप्त स्लाविक भाषा है। सोर्बीयन संस्कृति और भाषा की अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान है और यह समुदाय अपनी भाषा और अपनी संस्कृति को संरक्षित रखने के लिए प्रयासरत है।

© 2017 Rai University, Ahmedabad. All Rights Reserved

डेनिश अल्पसंख्यक:

इस श्रेणी में दूसरा डेनिश अल्पसंख्यक समुदाय है, जो मुख्यरूप से फ्लेंसबर्ग के सीमावर्ती शहर में, नॉर्डफ्रिसलैंड और श्लेस्विग-फ्लेंस्बर्ग और रेंड्सबर्ग-एकर्नफोर्ड जिले के उत्तरी भाग में रहता है। इस समुदाय की जनसंख्या लगभग पचास हज़ार है, जिसका ज़्यादातर हिस्सा डेनमार्क की सीमा पर स्थित फ्लेंसबर्ग शहर में निवास करता है। ये लोग परम्परागत रूप से जहाज निर्माण उद्योग में कार्यरत रहे हैं। "प्रथम विश्व युद्ध में जर्मन साम्राज्य की हार के पश्चात् वर्साय की संधि के तहत जर्मनी और डेनमार्क के बीच सीमा निर्धारित करने के लिए एक जनमत संग्रह किया गया था, जिसके फलस्वरूप उत्तरी श्लेस्विग डेनमार्क में शामिल हो गया और दक्षिण श्लेस्विग में बहुमत ने जर्मनी में ही रहने के पक्ष में फैसला किया।"[3] इस प्रकार डेनिश मूल के ये लोग जर्मन क्षेत्र में रह गए और इनकी ही तरह एक जर्मन अल्पसंख्यक समुदाय डेनमार्क के उत्तरी श्लेस्विग में निवास करता है।

सिंटी और रोमा:

सिंटी और रोमा समुदाय का भी यूरोप में बहुत ही विशिष्ट इतिहास है। सिंटी और रोमा सदियों से जर्मनी के लगभग सभी हिस्सों में छोटे समूहों के रूप में रहते हैं। हालांकि इस समुदाय को जर्मनी का मूल निवासी नहीं माना जाता है, लेकिन ये लोग लगभग पूरे यूरोप में हमेशा से भेदभाव और मानवाधिकारों के उल्लंघन का शिकार होते रहे हैं और इन लोगों को अक्सर सामाजिक और आर्थिक बहिष्कार और प्रताड़ना झेलनी पड़ी है। इसी कारण से उन्हें जर्मनी में राष्ट्रीय अल्पसंख्यक समुदाय के रूप में मान्यता प्राप्त है। "डेनिश, सोर्बीयन और फ़्रिसियाई समुदायों को जर्मन रोमा सिंटी की तरह न तो बहिष्कार और प्रताड़नाएं झेलनी पड़ी और न ही वो सामाजिक और आर्थिक रूप से मुख्य धारा से बहुत अलग रहे हैं, लेकिन नाज़ी सत्ता के दौर तथा पूर्वी जर्मनी के दौर, समय-समय में पर इन सभी समुदायों की भाषा एवं संस्कृति को राष्ट्रीय मानकीकरण के ख़तरों से ज़रूर गुजरना पड़ा है।"[4]

फ़्रिसियाई जनजाति:

फ़्रिसियाई जनजाति यूरोप में उत्तरी सागर के किनारे निवास करती है। इनका क्षेत्र फ़्रिजलैंड के नाम से भी जाना जाता है, जो नीदरलैंड, जर्मनी और डेनमार्क के बीच में स्थित है। फ़्रिसियाई लोग लगभग 500 ईसा पूर्व सम्भवतः दक्षिणी स्कैंडिनेविया से आए थे और उत्तरी सागर के तट पर बस गए। राइन और एम्स नदियों के मुहानों के बीच का क्षेत्र सबसे पुराने फ़्रिसियाई जनजातीय विस्तार वाले क्षेत्र रहे हैं। वर्तमान में फ़्रिसियाई अल्पसंख्यकों में उत्तर, पूर्व और सैटर फ़्रिसियाई समूह शामिल हैं, जो एक दूसरे से काफी भिन्न हैं। वे श्लेस्विग-होल्स्टीन, लैंडर और क्लोपेनबर्ग ज़िलों में रहते हैं। फ़्रिसियाई भाषा उत्तर-पश्चिमी जर्मनी और

© 2017 Rai University, Ahmedabad. All Rights Reserved

नीदरलैंड के कुछ हिस्सों में बोली जाती है।[5] फ़्रिसियाई जनजाति के लोग अपनी स्वतंत्रता और स्वाभाविक संस्कृति को बचाने के लिए हमेशा सक्रिय रहे हैं। आज भी फ़्रिसियाई जनजाति अपनी भाषा और संस्कृति को संरक्षित रखती है।

जर्मनी के सभी अल्पसंख्यक समुदायों का अपना देशज साहित्य उनकी अपनी भाषाओं में उपलब्ध है। 'द सोरबियन नेशनल एपिक' सोरबियन कवि जुरिज ब्रेज़न द्वारा लिखित एक महाकाव्य है, जो लुसाटिया में सोरबियन लोगों की कहानी बयां करता है। फ़्रिसियाई भाषा में कई लोक कथाएँ प्रचलित हैं, जो समुद्र के साथ फ़्रिसियाई लोगों के सह-संबंधों और प्रकृति से उनके संबंधों पर आधारित है। रोमा कहानियों की भी एक लंबी मौखिक परंपरा है, जो यूरोप में रोमा के अनुभवों, संस्कृति और परंपराओं पर आधारित होती है। जर्मनी में समकालीन स्वदेशी लेखकों के कुछ उदाहरण सोरबियन लेखक ज्यूरिज कोच और हेल्मुट फिकेलशर और फ़्रिसियाई लेखक जेनेके स्पोलेस्ट्रा और जेन्स बॉयकसेन हैं।

इन समुदायों के अपने देशज साहित्य के अलावा मुख्य धारा के जर्मन साहित्य में भी इन समुदायों के जीवन के विभिन्न पहलुओं का उल्लेख मिलता है। महान जर्मन साहित्यकार योहान वुल्फगांग फान गेटे (1741-1832 ई.) के नाटक 'फ़ाउस्ट' के दूसरे भाग के अंत में समुद्र और समुद्र के पास की समृद्ध भूमि का विवरण है, जिसमें फ़्रिसियाई क्षेत्र की झलक देखने को मिलती है। गेटे के निजी चिकित्सक रह चुके योहान क्रिश्चियन राईल फ़्रिसियाई मूल के थे और 'फ़ाउस्ट' के प्रकाशन के पहले ही गेटे ने अपनी एक कविता में योहान क्रिश्चियन राईल की फ़्रिसियाई पहचान के बारे में लिखा है।[6] 'ट्रुत्ज ब्लांके हांत्ज' जर्मन लेखक डेटलेव वॉन लिलिएनक्रॉन्स (1844-1909 ई.) की सबसे प्रसिद्ध कविता है, जो उत्तर सागर किनारे स्थित फ़्रिसियाई शहर रुँगहोल्ट के पतन क़ी कहानी बयां करती है। उन्नीसवी सदी के एक महत्वपूर्ण यथार्थवादी साहित्यकार थियोडोर स्टॉर्म फ़्रिसियाई मूल के हैं। इनके द्वारा वर्ष 1888 में लिखित उपन्यास 'डेर शिम्मेलराइटर भी एक प्राचीन गाथा है, "जिसके मुख्य पात्र 'हाउके हायन' को एक फ़्रिसियाई नायक के रूप में पहचाना जाता है।"[7] फ़्रिसियाई समुदाय के जीवन पर सबसे लोकप्रिय कृति है ओट्टो एर्न्स्ट स्मिट की कविता 'निस रैंडेर्स', जो जर्मनी के लगभग हर बच्चे का फ़्रिसियाई संस्कृति से परिचय करवाती है। ओट्टो एर्न्स्ट स्मिट द्वारा 1901 ई. में लिखित यह एक लोकगाथा की तरह प्रचलित है। इस कविता के नायक निस रैंडेर्स' का उल्लेख उसी दौर के कई अन्य साहित्यकारों की रचनाओं में भी मिलता है। ई. जान्सन ने 1896 ई. में निस रैंडेर्स' को अपनी एक कहानी 'उवे' के नायक के रूप में प्रस्तुत किया था।[8] ए. ज. मुल्डर, औगुस्ट केल्नर, यलिस वुल्फ़, राइन्होल्ड फ़ुक्स, रिचर्ड सटेक्लर, फ़्रीडा शैंज़ और फ़ीलिक्स डाहन और अन्य कई लेखकों ने उस दौर में अपनी कविताओं निस रैंडेर्स के पात्र को हार्रो के नाम की पहचान दी है।

© 2017 Rai University, Ahmedabad. All Rights Reserved

उत्तरी सागर तट की दलदलीय क्षेत्रों में रहने के कारण फ़्रिसियाई लोगों का समुद्र और ज़मीन दोनों से इनका अनोखा लगाव रहा है। इन लोगों के उनकी ज़मीन और पर्यावरण के रिश्ते के बारे में कहा गया है कि "जिस तरह कुछ पौधे और जानवर केवल समुद्र के पास ही पनपते हैं, उसी तरह फ़्रिसियों को सांस लेने के लिए समुद्र की नमकीन हवा की जरूरत पड़ती है। शायद ही कहीं मनुष्य को अपने अस्तित्व के लिए प्रकृति से इतना संघर्ष करना पड़ा हो, जितना यहां के निवासियों को करना पड़ा है।"[9] उत्तरी सागर में अक्सर आने वाले तूफ़ानों के कारण यहाँ के दलदलीय क्षेत्र में जीवन सदैव बहुत चुनौतीपूर्ण रहा है। फ़्रिसियाई लोग अपने मानवीय संवेदना और मानवीय आदर्शों के साथ व्यक्तिगत आज़ादी के मूल्यों पर भी बहुत गर्व करते हैं। फ़्रिसियाई विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रही है उनकी 'आज़ाद फ़्रिसियाई की मान्यता'[10] फ़्रिसियाई लोग हमेशा से अपने आप को एक स्वतंत्र समुदाय मानते रहे हैं। मध्यकाल में अपने पड़ोसी क्षेत्रों के सामंती प्रभाव से यह लोग अपने आप को बचाने में बहुत हद तक सफल रहे थे। 12वीं और 13वीं शताब्दी में फ़्रिसियाई लोगों ने स्वयं को स्वायत्त प्रांतीय समुदायों में संगठित किया था। प्रत्येक वर्ष समुदायों के हितों का प्रतिनिधित्व करने के लिए एक न्यायाधीश को चुना जाता था, जिनको 'रेडजेव' कहा जाता था। यह व्यवस्था 14वीं शताब्दी के मध्य तक कमजोर हो कर ख़त्म गई और जिसके बाद परिवारवादी शासकों की व्यवस्था की शुरुआत हुई ।

ओट्टो एन्र्स्ट स्मिट की कविता 'निस रैंडेर्स:

फ़्रिसियाई लोगों की मानवीय संवेदनाओं और सामाजिक दायित्व की विरासत की एक झलक हमें ओट्टो एन्र्स्ट स्मिट द्वारा लिखित कविता 'निस रैंडेर्स' में मिलती है। यह कविता निस रैंडेर्स नामक युवक द्वारा डूबते हुए जहाज़ से एक आदमी के बचाव का वर्णन करती है।

Nis Randers: Otto Enrst Schmidt (1862-1925)

Krachen und Heulen und berstende Nacht,
Dunkel und Flammen in rasender Jagd –
Ein Schrei durch die Brandung!

Und brennt der Himmel, so sieht man's gut:
Ein Wrack auf der Sandbank! Noch wiegt es die Flut;
Gleich holt sich's der Abgrund.

Nis Randers lugt – und ohne Hast

© 2017 Rai University, Ahmedabad. All Rights Reserved

Spricht er: »Da hängt noch ein Mann im Mast;
Wir müssen ihn holen.«

Da faßt ihn die Mutter: »Du steigst mir nicht ein!
Dich will ich behalten, du bliebst mir allein,
Ich will's, deine Mutter!«

Dein Vater ging unter und Momme, mein Sohn;
Drei Jahre verschollen ist Uwe schon,
Mein Uwe, mein Uwe!

Nis tritt auf die Brücke. Die Mutter ihm nach!
Er weist nach dem Wrack und spricht gemach:
»Und seine Mutter?«

Nun springt er ins Boot und mit ihm noch sechs:
Hohes, hartes Friesengewächs;
Schon sausen die Ruder.

Boot oben, Boot unten, ein Höllentanz!
Nun muß es zerschmettern...! Nein, es blieb ganz!...
Wie lange? Wie lange?

Mit feurigen Geißeln peitscht das Meer
Die menschenfressenden Rosse daher;
Sie schnauben und schäumen.

Wie hechelnde Hast sie zusammenzwingt!
Eins auf den Nacken des andern springt
Mit stampfenden Hufen!

© 2017 Rai University, Ahmedabad. All Rights Reserved

Drei Wetter zusammen! Nun brennt die Welt!
Was da? – Ein Boot, das landwärts hält –
Sie sind es! Sie kommen!

Und Auge und Ohr ins Dunkel gespannt ...
Still – ruft da nicht einer! – Er schreit's durch die Hand:
»Sagt Mutter, 's ist Uwe!«

(**भावार्थ:** निस रैंडेर्स के गाँव के लोगों को रात के अंधेरे में समुद्र की उफनती लहरों की आवाज़ के बीच एक चीख सुनाई देती है। बिजली चमकने पर उनको एक टूटी नाव दिखती है, जो समुद्र की उफनती लहरो में झूल रही है और किसी भी वक्त डूब सकती है। निस रैंडेर्स यह देख अपने साथियों से कहता है 'देखो वहाँ नाव के मस्तूल पर एक आदमी लटक रहा है, हमें उसे बचाना चाहिए।' लेकिन निस की माँ उसे समुद्र में जाने से रोकने की कोशिश करती है, क्योंकि वह पहले ही अपने पति और एक बेटे को समुद्र में खो चुकी है और एक और बेटा वर्षों से लापता है। माँ कहती है 'कम से कम तुम तो अपनी माँ के साथ रहो'। निस पलट कर पूछता है: 'और उसकी माँ?' इससे पहले कि माँ कोई जवाब दे, निस रैंडेर्स अपने साथियों के साथ उस डूबते व्यक्ति को बचाने हेतु विकराल समुद्र में उतर जाता है और इस तरह एक अनजान व्यक्ति के लिए अपना जीवन जोखिम में डाल देता है। आगे इस कविता में समुद्र में फँसे उस युवक के बचाव का बहुत ही नाटकीय वर्णन किया गया है। उनकी नाव समुद्र की उग्र लहरों मे हिचकोले खाते हुए उस टूटे जहाज़ की और बढ़ रही है और उनके गाँव के लोग बहुत चिंता भरी उत्सुकता से उस ओर देख रहे हैं। आख़िरकार निस की नाव लौटती नज़र आती है और उसमें से निस ख़ुशी से चिल्लाते हुए कहता है 'माँ से कहो, यह ऊवे है'। वास्तव में जिस आदमी को निस बचाकर लाता वह और कोई नहीं, बल्कि उसका तीन साल पहले खोया हुआ भाई ऊवे है।)

निस और उसके साथियों के लिए इस कविता में 'फ़्रीजेनगेवेख्स' सम्बोधन का इस्तेमाल किया गया है, जो निस की फ़्रिसियाई पहचान को इंगित करता है और इस संकट के समय में इस समुदाय के लोगों के संवेदनशील और बहादुर चरित्र को अभिव्यक्ति प्रदान करता है। 'फ़्रीजेनगेवेख्स' शब्द दो घटकों 'फ़्रीजेन' और 'गेवेख्स' से बना है। 'फ़्रीसेन' उत्तरी जर्मनी और नीदरलैंड के फ़्रिसियाई क्षेत्रों को संदर्भित करता है, जबकि 'गेवैक्स' शब्द का प्रयोग यहां पौधों के पर्याय के रूप में किया गया है। 'फ़्रीजेनगेवेख्स' शब्द का प्रयोग आम तौर पर उत्तरी जर्मनी और नीदरलैंड के क्षेत्र फ़्रीसलैंड के मूलवासी पौधों का वर्णन करने के लिए किया जाता है। ये पौधे क्षेत्र की जलवायु और मिट्टी की स्थितियों के अनुकूल हो गए हैं और अक्सर

© 2017 Rai University, Ahmedabad. All Rights Reserved

कठिन परिस्थितियों में भी पनप सकते हैं। फ़्रीज़लैंड की संस्कृति और इतिहास के संदर्भ में इस शब्द का एक विशेष अर्थ है। ऑनलाइन शब्दकोष 'fremdwort.de' के अनुसार "फ़्रीजेनगेवेख्स शब्द का उपयोग फ़्रीज़लैंड्स क्षेत्र और संस्कृति के साथ एक निश्चित जुड़ाव या पहचान की अभिव्यक्ति के रूप में भी किया जा सकता है। जो लोग इस क्षेत्र के रहने वाले है या किसी अन्य तरीके से इस क्षेत्र से जुड़ाव महसूस करते हैं, वे अपने इस जुड़ाव को व्यक्त करने के लिए खुद को 'फ़्रीजेनगेवेख्स' के रूप में वर्णित कर सकते हैं। इसके अलावा, फ़्रिसियाई क्षेत्र के पौधों का उल्लेख स्थानीय कला और लोककथाओं में भी बहुत मिलता है।"[11] कुल मिलाकर, शब्द 'फ़्रीजेनगेवेख्स' एक बहुआयामी और सांस्कृतिक रूप से सुंदर शब्द है, जिसका उपयोग वनस्पति विज्ञान के साथ-साथ कला और लोककथाओं में भी किया जाता है, जिसका उपयोग फ़्रीसलैंड के क्षेत्र और इसकी अनूठी विशेषताओं के संबंध का वर्णन करने के लिए किया जाता है।

ओट्टो एर्न्स्ट स्मिट की कविता की एक खूबी यह है कि कविता का नायक निस बहुत ही कम शब्दों में मानवता के प्रति अपने दायित्व की अभिव्यक्ति कर देता है। सिर्फ़ तीन शब्दों (और उसकी माँ?) में अपनी माँ को निरुत्तर कर देता है। यूलियूस वुल्फ़[12] और फ़्रीडा शैंज़[13] के संस्करणो में नायक हार्रो का उसकी माँ के बीच के संवाद को थोड़ा विस्तृत रूप में प्रस्तुत किया गया है। राइन्हार्ड फ़ूक्स की कविता में भी इस दृश्य का विस्तृत उल्लेख है, जहां निस अपनी माँ को समझाता है कि भगवान ने उसको किसी की जान बचाने का अवसर दिया है और अगर उसने यह अवसर गवां दिया तो यह उसके लिए बड़ी शर्म की बात होगी।[14] अलग-अलग संस्करण निस की कहानी की प्रस्तुति की दृष्टि से देखा जाए तो एक दूसरे से भिन्न है, लेकिन उन सबका संदेश एक ही है। सभी साहित्यकार अपनी अपनी रचनाओं में एक ऐसे व्यक्ति का चित्रण करते हैं, जो अपने स्वार्थ के बारे में नहीं सोचता है, बल्कि कठिन से कठिन परिस्थितियों में निष्ठापूर्ण परोपकार और बलिदान के मूल्यों का निर्वहन करता है।

© 2017 Rai University, Ahmedabad. All Rights Reserved

निष्कर्ष:

जर्मनी के मूल निवासी जनजातीय समुदाय सामाजिक और आर्थिक तौर पर मुख्यधारा से पिछड़े नहीं रहे हैं, इसलिए जर्मनी के जनजातीय समुदायों के जीवन, विचारों और सरोकारों की भारतीय जनजातीय समुदायों के साथ तुलना करना क़तई न्यायसंगत नहीं होगा। उनके समकालीन सरोकार सामान्य तौर पर अपनी सांस्कृतिक पहचान और भाषा के संरक्षण की लड़ाई तक ही सीमित है। जर्मन साहित्य में इन समुदायों के सादगीपूर्ण जीवन, उनके प्रकृति के साथ एक निस्वार्थ सम्बन्ध और उनके सांस्कृतिक मूल्यों का जीवंत चित्रण मिलता है। ओट्टो एर्न्स्ट स्मिट की इस कविता का फ़्रिसियाई नायक निस रेंडर्स बहुत ही सादगी और सरलता से अपने मानवीय धर्म की अभिव्यक्ति करता है। अपनी जान की परवाह किए बिना एक अनजान व्यक्ति को बचाने समुद्र में चला जाता है और अपने समुदाय की मानवीय मूल्यों की विरासत की एक मिसाल पेश करता। निस रैंडेर्स साहित्यिक रचनाओं का एक काल्पनिक पात्र मात्र होने के बावजूद साहित्य के अलावा अन्य क्षेत्रों में भी बहुत ही लोकप्रिय मिसाल रूप में उपस्थित है। वर्ष 1990 में जर्मनी समुद्रतटीय बचाव दल के बेड़े में निस रैंडेर्स नामक एक जहाज़ को शामिल किया गया था। वर्ष 2002 तक हैम्बर्ग और म्यूनिक के बीच निस रैंडेर्स नामक एक ट्रेन चलती थी। इस कविता को बीसवीं शताब्दी की शुरुआत से ही कई पाठ्यपुस्तकों में शामिल कर लिया गया था। यह कविता वर्षों से छात्रों-छात्राओं के लिए अपनी साहित्यिक गुणवत्ता और रोमांचक प्रस्तुति के साथ-साथ बलिदान और कर्तव्यनिष्ठ शैक्षिक मूल्यों की स्रोत रही है।

© 2017 Rai University, Ahmedabad. All Rights Reserved

संदर्भ और टिप्पणी:

1. जर्मनी के संघीय आंतरिक मंत्रालय की आधिकारिक वेबसाइट पर जनजातीय समुदायों की वर्तमान स्थिति और उनके अधिकारों से संबंधित विस्तृत जानकारी उपलब्ध है: https://www.bmi.bund.de/DE/startseite/startseite-node.html retrieved on 10.10.2021
2. संभवतः इसी आपत्ति के कारण कई स्थानीय सरकारें आधिकारिक तौर पर भी 'अल्पसंख्यक' शब्द की जगह 'जनजातीय समुदाय' शब्द के इस्तेमाल को मंज़ूरी देती है। Palleck, M. (2000), Minderheiten in Deutschland - Der Versuch einer juristischen Begriffsbestimmung, Archiv des öffentlichen Rechts, Vol. 125, No. 4 (2000), Mohr Siebeck GmbH & Co. KG, p. 601.
3. https://minorityrights.org/minorities/danes/ retrieved on 10.10.2021
4. https://minorityrights.org/minorities/sorbs/ retrieved on 10.10.2021
5. https://minorityrights.org/minorities/frisians-2/ retrieved on 10.10.2021
6. Richter, A (2007), Goethes Verwandtschaft in Ostfriesland, Goethe-Genealogie http://www.goethe-genealogie.de/aufsaetze/richter_2007.html retrieved on 10.08.2021
7. हालाँकि थॉमस स्टीज़न इस दावे को विवादास्पद मानते हैं, क्योंकि 'हाउके हायन' परंपरागत फ़्रिशियन क्षेत्र उत्तरी सागर नहीं बल्कि वाइख्सैल क्षेत्र का वासी हैं। Steesen, T. (2020), Die Friesen: Menschen am Meer, Wachholz Verlag Hamburg. p. 8.
8. E. Jensen: Uwe. Erzählung aus dem Leben. In: Deutsche Revue., p. 143–151.
9. "Wie es Pflanzen und Tiere gibt, die nur in der Nähe des Meeres gedeihen, so brauchten die Friesen die Salzluft des Meeres zum Atmen … Tatsächlich hat kaum irgendwo sonst der Mensch so mit der Natur um seine Existenz ringen müssen wie hier." Steesen, T. (2020), Die Friesen. Menschen am Meer. Wachholtz, Kiel/Hamburg, p. 23.
10. Schmidt, H (2001). "Häuptlingsmacht, Freiheitsideologie und häuerliche Sozialstruktur im spätmittelalterlichen Friesland." Vorträge und Forschungen: Zwischen Nicht-Adel und Adel, Bd. 53 (2001), Jan Thorbecke Verlag Stuttgart, p. 288.
11. https://www.fremdwort.de/suchen/bedeutung/friesengewächs retrieved on 10.10.2021
12. „Ja, Mutter, weisst du denn so genau,
    Ob der auf dem Wrack dort todesmatt,
    Nicht auch daheim eine Mutter noch hat?"

© 2017 Rai University, Ahmedabad. All Rights Reserved

Julius Wolff: Aus Sturmes Not. In: Bern, M. (1904), Die zehnte Muse. Dichtungen vom Brettl und fürs Brettl. Eisner, Berlin, p. 311–313.

13. „Harro sprach freundlich: Du denke dran,
Dass den, den der Tod dort umfasst, der kalte,
Auch eine Mutter beweinen kann!
Ich fahre, Mutter!“
Schanz, F. (1896), Daheim-Kalender für das Deutsche Reich. Verlag Velhagen & Klasing, p. 110.
14. „Mich ruft die Pflicht;
Ihr folg’ ich, Mutter; o vergieb!
Versäumt’ ich’s, wär’ mir’s Schmach und Spott.
O liebe Mutter, danke Gott,
Daß mir zu thun doch etwas blieb!
Im starken Schutz des Höchsten steh’
Ich auf dem Meere ja wie hier!“
Fuchs, R. (1895), Der letzte Mann an Bord. Velhagen & Klasings Monatshefte. Band 10, 1895/96, Heft 4 (Dezember 1895), p. 413–416.

© 2017 Rai University, Ahmedabad. All Rights Reserved